स्वातंत्र्य आंदोलन आणि हिंदी साहित्य

विशेषांक

वै.धुंडा महाराज देगलुरकर महाविद्यालय, देगलूर

Open Or Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

ISSN-2454-6283 IMPACT FACTOR - (IIJIF-7.312)

14 sept.-2022

अतिथि सम्पादक
डॉ.अभिमन्यु पाटील,
डॉ.पुष्पा गायकवाड

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव
तकनीकी सम्पादक
श्री.अनील जाधव

अनुक्रमणिका

संपादकीय 10
–डॉ.अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील 10
1.मानस भवन में आर्यजन.....11
–डॉ.श्रीराम परिहार.....11
2.भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रबोध और युग–चेतना.....14
–*डॉ.राहुल मिश्र*.....14
3.भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी कविता का योगदान.....17
–*प्रोफे.संजय जाधव*.....17
4.भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 22
–*डॉ. परविंदर कौर महाजन(कोल्हापुरे)*.....22
5.राष्ट्र को अर्पित भारतीय दलित वीरांगनाओं का शौर्य.....25
–*प्रो.डॉ.प्रतिमा जी.येरेकार*.....25
6.'स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता'.....29
–*कैप्टन डॉ.प्रो.अनिता मधुकरराव शिंदे*.....29
7.उर्वशी काव्य में मानव हित का प्रयोजन.....32
–*प्रा.डॉ.पी.एम.भुमरे*.....32
8.माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 35
–*प्रा.डी.आर. भुरे*.....35
9.स्वाधीनता संघर्ष में पत्र–पत्रिकाओं का भूमिका.....37
–*डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ*.....37
10.देश हम जलने न देंगे : राष्ट्रीय अस्मिता की धरोहर 40
–*डॉ.संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी*.....40
11.भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और नागार्जुन का काव्य.....42
–*प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम घवरे*.....42
12.स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य 44
–*प्रा.डॉ.जाधव के.के.*.....44
13.स्वाधीनता आंदोलन और निराला का काव्य 47
–*डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव*.....47

10.देश हम जलने न देंगे : राष्ट्रीय अस्मिता की धरोहर

–डॉ.संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी
सहयोगी प्राध्यापक एवं
विभागाध्यक्ष का.र.मा.लक्ष्मी–शालिनी महिला महाविद्यालय, पेझारी

राष्ट्रीयता की भावधारा का अभ्युदय भारतेन्दु युग में हुआ। बाबू भारतेन्दु ने स्वयं राष्ट्रीय गीत गाकर जनता में राष्ट्रीय भावना प्रज्वलित की। उनसे प्रेरित होकर अनेक साहित्यकार स्वतंत्रता आंदोलन के हिस्सा बने। द्विवेदी युग में राष्ट्रीय भावना, समाज सुधार और पुरोगामी विचारों का प्रारंभ हुआ। साथ ही द्विवेदी युगीन कवियों ने भारतीय संस्कृति का गौरवगान किया और लोगों में स्वाभिमान की भावना जागृत की। छायावादी युग में राष्ट्रीय भावना को जनता की ताकत मिली इसलिए इस युग में राष्ट्रीय भावधारा एक नयी शक्ति लेकर प्रवाहमान हुई। उसके पश्चात नए नए विषय, विमर्श साहित्य जगत में आते रहे परंतु राष्ट्रीयता का भाव भी साहित्य में प्रवाहित रहा। वर्तमान काल में राष्ट्र कवि के रूप में रमेश पोखरियाल 'निशंक' का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने साहित्य के विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। काव्य, उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में उन्होने अपनी बौद्धिक प्रतिभा की चमक दिखाई है। उनकी रचनाओं में विविधता है जिसके कारण साहित्य जगत में वे लोकप्रिय हुए है तथा सामान्य जनता के बीच भी अपने उदार और सहयोगी प्रवृत्ति के कारण आदरणीय रहे है। वास्तव में वे बहुत ही भावुक और सह्रदय रचनाकार है इसलिए उनका ध्यान वर्तमान समस्याओं और आवश्यकताओं की ओर जाता है। अतः उनके काव्य में कहीं भी मनोरंजन या किसी की ख़ुशामद नहीं दिखाई देती। वे भलीभाँति जानते है कि आज देश को एकता और अखंडता कि सबसे अधिक आवश्यकता है इसी से देश कि स्वतंत्रता सुरक्षित रह सकती है और देश विकास की ओर अग्रेसर हो सकता है इसीलिए देश की सध्य स्थिति के अनुसार उनकी रचनाओं के विषय चुने गए है।

रमेश पोखरियाल 'निशंक' की रचनाओं में राष्ट्रियता और देश प्रेम की भावना स्पष्ट झलकती है। उनका स्पष्ट मत है कि किसी भी राष्ट्र में एकता का भाव तभी पैदा हो सकता है जब वह व्यक्तिगत स्वार्थों, जातिगत हितों, क्षेत्रीयता, धर्म, भाषा के भेदभावों से ऊपर उठाकर सोचे। देश आजाद हो गया मतलब हमारे कर्तव्यों और जिम्मेदारियों कि इतिश्री नहीं होती। देश कि स्वतंत्रता और अखंडता के लिए आज भी भुजदंडों में बल कि आवश्यकता है। अपने देश से सच्चा प्रेम करने वाले देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने से भी नहीं घबराते। अतः वे अपने काव्य के माध्यम से देश की उन्नति और समृद्धि के लिए लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास करते है। अपनी 'देश हम जलने न देंगे' इस कविता में वे इसी भाव को व्यक्त करते है–

'हर कदम इतिहास स्वर्णिम,/हम इसे गलने न देंगे।/हम स्वयं जल जाएँगे पर, देश हम जलने न देंगे।/सभी को बांधव समझना, रही मानवता हमारी। /बंधु से ही कपट करना, नियति दूषित थी तुम्हारी।/सहिष्णुता के साधकों को, हम अधिक छलने न देंगे।/हम स्वयं जल जाएँगे पर, देश हम जलने न देंगे।'...1 इस प्रकार कवि की लेखनी जन–जन में देश प्रेम की भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से देश और समाज को सुस्वरथ और मजबूत बनाना चाहते है और देश के हित में अपना सर्वस्व समर्पित करने को तैयार है।

'निशंक' के रचनाओं में मानव जीवन के प्रति आस्था और प्राणी मात्राओं के प्रति प्रेम झलकता है। कवि की रचनाओं में व्यापक मानवतावाद कूट कूट कर भरा है। उनके काव्य में केवल भावों की तरलता और भावुकता ही नहीं है बल्कि उसमें गहन चिंतन, राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं पर उनकी यथार्थ अभिव्यक्ति भी स्पष्ट हुई है। हमारे देश मे ही नहीं सर्वत्र अक्सर ऐसा पाया गया है कि गरीब व कमजोर लोगों का शोषण कुछ अमीर या पूंजीपति लोग करते है। कई बार पूँजीपतियों द्वारा गरीबों के जमीन पर कब्जा किया जाता है। उनकी झोपड़ियों को भी छिना जाता है और वहाँ बड़े बड़े भवन खड़े किए जाते है। उनका दुख देखकर वे द्रवित होते है। उनकी आत्मा कराह उठती है। वह समाज के इन शोषकों के प्रति विद्रोह करने की चेतावनी देते है। 'तुमने मेरी झोपड़ी जलाई है' इस कविता में वे इसी भाव को व्यक्त करते है–

'लेकिन/मेरी झोपड़ी की जगह/गगन छूने वाला भवन खड़ा है,/मैं देख रहा हूँ, और इसके भीतर वह जन पड़ा है,/जिसने नफरत की दीवारों को हमारे सीने में खड़ा किया है।'...2

'बेरोजगारी' शब्द बहुत छोटा है लेकिन इसके परिणाम समाज और देश के लिए बहुत घातक होते है। महात्मा गांधी ने बेरोजगारी को 'समस्याओं की समस्या' कहा है। आज यह समस्या एक वायरस की तरह फैल चुकी है। हमारे देश को युवाओं का देश कहा जाता है क्यों कि जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है जो की अच्छी बात है परंतु युवा वर्ग बेरोजगार हो तो देश के लिए कोई लाभ नहीं होता। देश की श्रम शक्ति व्यर्थ जाती है या कहीं कहीं यह युवा श्रम शक्ति चोरी, डकैती, हत्या, अपहरण, रिश्वत, तोडफोड आदि अपराधिक और आतंकवादी गतिविधियों में लग जाती है। उनका नैतिक और लोकतान्त्रिक मूल्यों पर से विश्वास खत्म हो जाता है। सरकार के प्रति तीव्र असंतोष निर्माण होता है। वे दिशाहीन हो जाते है। इसी विचार को कवि 'निशंक' ने 'वे बेरोजगार' इस कविता में व्यक्त किया है।

'लिखे–पढ़े थे/ वे बेरोजगार,/ किंतु/ इस व्यवस्था ने उनसे/उनका सब कुछ छीना है/तभी तो/पथ–विहीन,/ लक्ष्यहीन/उनको सड़कों पर जीना है।'... 3

देश को स्वतंत्रता मिली, परिवेश बदला, लेकिन समस्याएँ खत्म नहीं हुई बल्कि परिवर्तित हो गयी है। स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल क्रांतिचेताओं की सारी सपनों पर पानी फिर गया। रामराज्य का सपना टूट गया। अनेक अंतर्विरोध समाज में जन्म लेते गए। युवा वर्ग पाश्चात्य, संस्कृति का अंधानुकरण करने लगा तथा भौतिक सुखों के पीछे भागने लगा। सामाजिक, आर्थिक धार्मिक विषमता से देश खोखला होने लगा। आजादी के 75 साल बाद भी देश की इस स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। उल्टा नई नई समस्याओं के खड़ी हो रही है। राजनीति का क्षेत्र भी बहुत भ्रष्ट हो चुका है। ऐसे स्थिति में संवेदनशील कवि 'निशंक' जी मर्माहत होना स्वाभाविक है। वे चुपचाप सब कुछ बर्बाद होते देख नहीं सकता है। इसलिए कवि अपनी कविता 'शांत हूँ पर' इस कविता में जो लोग बंधुता, प्रेम नष्ट करना चाहते है उन्हे चेतावनी देते है। 'शांत हूँ पर सोच लो, प्रचंड बन सकता हूँ क्षण में। /दुष्टता भू से मिटाने, काल बन सकता हूँ रण में।'. 4

निजी स्वार्थ की पूर्ति करने के लिए इन्सान छल–कपट करने से पीछे नहीं रहता। किसी भी तरह वे अपने अनैतिक लक्ष को प्राप्त करने की कोशिश करते है। नैतिकता व मानवीय मूल्य उनके लिए कोई मायने नहीं रखते। वे केवल खुद के बारे में सोचते है, बस अपना फायदा देखते है। स्वार्थ इन्सान को अंधा बना देता है। यह एक अत्यंत उग्र भावना है जिससे कारण वह किसी को भी धोखा दे सकता है। उपकार करने वालों को भी वह आसानी से धोखा दे जाता है। ऐसे ही स्वार्थ के नामपर अधर्म करनेवाले अधर्मी लोगों पर उन्होने गिरे हुए लोग कविता में व्यंग्य कसा है। 'ये कितने गिरे हुए लोग हैं /जिन्होंने अपने स्वार्थों के लिए वहाँ पर आग लगाई है/जहाँ जीवन मिलता है जीने के लिए।/वहाँ भी ज़हर घोल दिया/जहाँ पानी की जगह अमृत मिलता है पीने के लिए।'... 5 पहाड़ हमें बड़े अच्छे लगते है। परंतु वहाँ रहनेवाले पहाड़ी लोगों की समस्याएँ भी अनेक है। विषम भौगोलिक स्थिति, कठिन जीवन, बुनियादी सुविधाएं न होना, रोजगार की कमी खेती भी बारिश पर निर्भर होती है।

इन चुनौतियों और समस्याओं को हल करना चाहिए परंतु सरकारी अफसर या नेतागण केवल काम के नारे लगते है। काम करने का दिखावा करते है केवल कागज के घोड़े नचाते है। "लक्ष्य पूरा करो' का नारा लगाते हैं।/कल मीटिंग थी आज मीटिंग है/कल घुड़सवारों को आमंत्रित कर आते हैं।/हर रोज एक मीटिंग हो जाती है। /हर रोज की इस मीटिंग में कल तैयार कर देने की /प्रगति आख्या आती है।" 6 'निशंक' जी ने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को उन्नत करने के लिए अथक प्रयास किए है। कवि के हृदय में देश प्राचीन परंपराओं, रीतिरिवाजों, एवं मान्यताओं के प्रति असीम प्रेम है। कवि को डर है की कहीं वैज्ञानिक विकास के पीछे दौड़ते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान खो न दे इसलिए कवि स्वयं ही इस पर आगे बढे है–'मैं स्वयं 'नव राह' बन 'नव चेतना' संचित करूँगा

/स्वयं बन इतिहास नूतन सत्य का शोधन करूँगा।/मैं स्वयं अब किरण बनकर निशा को भी प्रभा दूँगा।'... 7

निष्कर्ष

रूप में कहा जा सकता है कि राष्ट्रकवि रमेश पोखरियाल 'निशंक' अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के कारण हिन्दी साहित्य में अप्रतिम स्थान प्राप्त करने में सफल रहे है। कवि ने अपनी रचनाओं में सुंदर भावों और सुविचारों को शुद्ध साहित्यिक भाषा एवं शैली के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होने में समय और समाज की गहरी पड़ताल की है और अपनी कृतियों के लिए देशहित से युक्त विषयों को चुना है। व कल्पना के पंख पर उड़ते हुये भी धरातल को भुले नहीं है। यही कारण है कि कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से इस मातृभूमि को महत्वपूर्ण विचारों एवं भावनाओं से परिपूर्ण करने में सफल हुए है।

आलोच्य कविता संग्रह –

(1)रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'देश हम जलने न देंगे' हिन्दी साहित्य निकेतन उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 26 (2)रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'देश हम जलने न देंगे' हिन्दी साहित्य निकेतन उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 21 (3)वहीं पृष्ठ 79(4)वहीं पृष्ठ 22(5)वहीं पृष्ठ 28 (6)वहीं पृष्ठ 59(7)वहीं पृष्ठ 30